

[2023] 8 एस. सी. आर. 152

प्रकाश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद

वी.

महाराष्ट्र राज्य

(अपराधिक अपील सं। 1636-1637 2023 का)

19 मई, 2023

[बी. आर. गवई, विक्रम नाथ और संजय करोल, जे. जे.]

परिस्थितिजन्य साक्ष्य का साक्ष्य मामला-छह साल पुराना

बच्ची का यौन उत्पीड़न किया गया, उसकी हत्या कर दी गई और उसे 'नाला' में फेंक दिया गया

-

अपीलार्थी को संदेह के आधार पर गिरफ्तार किया गया था-दंडनीय अपराध करने के लिए आरोपित
s.376,377,302 और 201,

आई. पी. सी.-समवर्ती रूप से दोषी ठहराया गया, आरोप के लिए मौत की सजा दी गई

यू/ s.302 और अन्य अपराधों के लिए सजा-की शुद्धता-आयोजित:

इसे प्रस्तुत करने वाली परिस्थितियों की श्रृंखला में जम्हाई लेने वाले अंतराल थे

स्थापित होने से बहुत दूर, अपीलार्थी के अपराध की ओर इशारा करते हुए एजेंसियों की ओर से कई
अनियमितताएं और अवैधताएं

मामले की जाँच-अपीलार्थी पर लगाए गए आरोप साबित नहीं हुए

निचली अदालतों के आदेशों को दरकिनार कर दिया गया-दंड संहिता, 1860-एस. 376 ,

377 , 302 और 201-दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 - s.53A -

आपराधिक कानून।

आपराधिक कानून-चाहे प्रकटीकरण की गैर-रिकॉर्डिंग हो

अपीलार्थी का बयान जिस भाषा में दिया गया था

और इसे अपीलार्थी के लिए पूरी तरह से अज्ञात भाषा में दर्ज करना,

जिन विषयों को पढ़ा नहीं गया था और उन्हें समझाया नहीं गया था, वे कर सकते हैं

कहा जा सकता है कि इसने न्याय के लिए कोई पूर्वाग्रह पैदा किया है?

आयोजित किया गया: हां-अपीलार्थी को मराठी में पढ़ना-लिखना नहीं आता था

- कथित प्रकटीकरण बयान के अवलोकन से पता चलता है कि यह था

मराठी में रिकॉर्ड किया गया और जांच अधिकारी ने पढ़ा नहीं है

अपीलार्थी को उसकी स्थानीय भाषा में उसकी सामग्री के बारे में या उसके बारे में समझाया जाता है।

भाषा अर्थात् हिंदी-अपीलार्थी के लिए समझना महत्वपूर्ण था।

उसके खिलाफ अभियोजन का मामला-रिकॉर्ड में कुछ भी नहीं है

यह दिखाने के लिए कि साक्ष्य दर्ज करना व्यावहारिक नहीं था अपीलार्थी के साथ-साथ अन्य,
जिनकी स्थानीय भाषा मराठी नहीं थी, लेकिन

हिंदी भाषा न होने के संदर्भ में सांविधिक सुरक्षा उपाय अपीलार्थी के कारण हुए पूर्वाग्रह का
अनुपालन किया गया-संहिता

दंड प्रक्रिया, 1973।

152 प्रकाश निषाद @केवट जिनाक निषाद बनाम। राज्य की स्थिति

महाराष्ट्र

दंड प्रक्रिया संहिता, 1973। 53ए-गैर-अनुपालन

आयोजित के साथ: वर्तमान मामले में, किसी भी गवाह ने अपीलार्थी की चिकित्सीय जांच के तथ्य को अपदस्थ नहीं किया जैसा कि यू/ s.53A-यह निर्णय लेने का कोई कारण नहीं दिया गया था कि s के प्रावधानों का पालन करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। 53ए-अपीलार्थी के रक्त और वीर्य के नमूने फॉरेंसिक विश्लेषण के लिए भेजे गए थे-हालाँकि, यह स्थापित करने के लिए रिकॉर्ड पर कुछ भी नहीं है कि ऐसे नमूने किसने लिए, किस तारीख को, कितने अवसरों पर और उन्हें एक साथ क्यों नहीं भेजा गया था किसी भी पुलिस अधिकारी ने नमूनों को सुरक्षित और सुरक्षित रखने की औपचारिकताओं का पालन किए जाने की गवाही नहीं दी-रिकॉर्ड पर केवल एक दस्तावेज़ (Ext.79) है, जो अपीलार्थी की चिकित्सकीय जांच का संकेत देता है-लेकिन यह दस्तावेज़ भी शरीर के हिस्से का नमूना तैयार किए जाने का खुलासा नहीं करता है-किसी भी स्थिति में, इस तरह की जांच करने वाले डॉक्टर ने नमूने की पुष्टि नहीं की।

इसकी सामग्री की शुद्धता-इसके अलावा, दस्तावेज़ अपने आप में कुछ अंतर्वेशन के साथ प्रेरणादायक विश्वास नहीं है।

इसके अतिरिक्त, दस्तावेज़ लागू की गई वैधानिक आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है। s.53A-यह इस अपराध की जाँच में एक स्पष्ट चूक है, क्योंकि एक छह साल के बच्चे का दोनों गुप्तांगों पर यौन उत्पीड़न किया गया था-अपीलार्थी की चिकित्सा जांच के परिणामस्वरूप इस तरह के हमले का पता चला होगा जब नमूने एकत्र किए जाते हैं तो उन्हें जल्द से जल्द संबंधित प्रयोगशाला में भेजा जाना चाहिए-नमूने भेजने में देरी अस्पष्ट है-"बिना किसी देरी के" और "हिरासत की श्रृंखला" पहलू जो इस तरह के साक्ष्य की जीवन्तता के लिए अपरिहार्य हैं, उनका अनुपालन नहीं किया गया था।

के साथ-इस प्रकार, तत्काल मामले में, डी. एन. ए. रिपोर्ट अपीलार्थी को फांसी पर चढ़ाने के लिए महाराष्ट्र पुलिस नियमावली भेजने का आधार नहीं हो सकती है।

परिशिष्ट XXIV-साक्ष्य-आपराधिक कानून।

साक्ष्य-डी. एन. ए. साक्ष्य का मूल्य-चर्चा की गई।

आपराधिक कानून-आजीवन कारावास या मृत्युदंड जैसे गंभीर दंड वाले अपराध-भूमिका और जांच अधिकारियों की जिम्मेदारियां, जिनका पालन नहीं किया गया-पदच्युत।

अपीलों को अनुमति देते हुए, न्यायालय ने

पकड़ना: 1.1 अपीलार्थी को मराठी में पढ़ना और लिखना नहीं आता था। यह स्थिति होने के कारण, इस न्यायालय ने

अपीलार्थी के [2023] 8 एस. सी. आर. करने में सक्षम होने के महत्व पर प्रकाश डाला।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

उसके खिलाफ अभियोजन पक्ष के मामले को समझें। ऐसा करने में असमर्थता, भाषा की बाधा के कारण अपीलार्थी के मामले में प्रतिकूल प्रभाव डालती है। अभिलेख पर यह दिखाने के लिए कुछ भी नहीं है कि अपीलार्थी के साथ-साथ अन्य लोगों के साक्ष्य दर्ज करना व्यावहारिक नहीं था, जिनकी स्थानीय भाषा मराठी नहीं थी, बल्कि हिंदी थी। मूल गवाही, जिसमें से पाठ, अवधि और उनका वास्तविक महत्व है गवाही का अंदाजा लगाया जा सकता है, यह रिकॉर्ड का हिस्सा नहीं है। इसलिए यह

यह स्पष्ट है कि भाषा के संदर्भ में वैधानिक सुरक्षा उपायों का पालन नहीं किया गया है, जिससे अपीलार्थी के लिए सैयद कासिम रिज़वी के संदर्भ में पूर्वाग्रह पैदा होता है। [पैरा 45] [168-एफ-एच; 169-ए]

सैयद कासिम रजवी बनाम। हैदराबाद राज्य 1953 एससीआर 589

- पीछा किया।

सिजू कुरियन बनाम। कर्नाटक राज्य 2023 एस. सी. सी. ऑनलाइन 429-विशिष्ट।

1.2 अपीलार्थी का कोई खून किसी पर नहीं पाया गया।

पुलिस द्वारा बरामद किए गए सामान। अभियोजक और उसके योनि स्वैब से संबंधित निकर (भूरे) पर केवल वीर्य के धब्बे पाए गए। अपीलार्थी के रक्त और वीर्य के नमूने फॉरेंसिक विश्लेषण के लिए भेजे गए थे। हालांकि महत्वपूर्ण रूप से, यह स्थापित करने के लिए रिकॉर्ड पर कुछ भी नहीं है कि ऐसे नमूने किसने लिए, किस तारीख को, कितने अवसरों पर और उन्हें एक ही बार में क्यों नहीं भेजा गया, किसी भी पुलिस अधिकारी ने इसकी औपचारिकताओं की गवाही नहीं दी है।

नमूनों को सुरक्षित और सुरक्षित रखने के साथ अनुपालन किया जा रहा है। अभिलेख पर केवल एक दस्तावेज (Ext.79) है, जो दर्शाता है कि अपीलार्थी की चिकित्सकीय जांच की गई है। लेकिन यह दस्तावेज़ भी शरीर के अंग के नमूने को तैयार किए जाने का खुलासा नहीं करता है। किसी भी मामले में, इस तरह की जांच करने वाले डॉक्टर ने कदम नहीं रखा है

इसकी सामग्री की शुद्धता की गवाही देने के लिए गवाह बॉक्स। इसके अलावा दस्तावेज़ अपने आप में अविश्वसनीय विश्वास है क्योंकि यह न्यायालय उसमें और एक अलग हाथ में कुछ अंतर्वेशनों को नोटिस करता है। इसके अतिरिक्त, दस्तावेज़ धारा 53ए Cr.P.C. Here, एक बच्चे के तहत लगाई गई वैधानिक आवश्यकताओं के लिए सही नहीं है।

छह साल की कम उम्र के लड़के पर बेरहमी से हमला किया गया और उसकी हत्या कर दी गई। अपीलार्थी को अपराध करने के संदेह में गिरफ्तार किया गया था। पुलिस उसके अनुसार आगे बढ़ी और माना जाता था कि उसने हिरासत में अपीलार्थी द्वारा दिए गए बयानों के अनुसार खोज की थी, तो इसे किस तरह से कहा जा सकता है-प्रकाश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद बनाम।

महाराष्ट्र राज्य

कि, उस समय जब अधिकारियों द्वारा इस तरह के सकारात्मक आह्वान की आवश्यकता थी, धारा 53ए के अनुपालन के लिए उचित आधार मौजूद नहीं थे? इस न्यायालय के विचार में यह इस अपराध की जाँच में एक स्पष्ट चूक है, क्योंकि छह साल की बच्ची का उसके शरीर के दोनों गुप्त अंगों पर यौन उत्पीड़न किया गया था। अपीलार्थी की चिकित्सीय जाँच

इसके परिणामस्वरूप इस तरह के हमले का पता चला है। वर्तमान में

मामले में, नमूने भेजने में देरी अस्पष्ट है और इसलिए, संदूषण की संभावना और मूल्य में कमी की सहवर्ती संभावना से यथोचित रूप से इनकार नहीं किया जा सकता है। जब नमूने एकत्र किए जाते हैं तो उन्हें जल्द से जल्द संबंधित प्रयोगशाला में भेजा जाता है। अभिरक्षा की श्रृंखला का तात्पर्य है कि नमूना लेने के समय से लेकर उस समय तक जिसमें इसकी भूमिका है

जांच और बाद की प्रक्रियाएं पूरी हो जाती हैं, उक्त साक्ष्य के टुकड़े को संभालने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रलेखन में विधिवत रूप से स्वीकार किया जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सत्यनिष्ठा है

असम्बद्ध। यह अनुशंसा की जाती है कि एक दस्तावेज़ विधिवत होना चाहिए

अभिरक्षा को सूचीबद्ध करते रहे। दूसरे शब्दों में अभिरक्षा दस्तावेज़ की एक श्रृंखला एक दस्तावेज़ है, जिसमें साक्ष्य एकत्र करने वाले व्यक्ति का नाम या आद्याक्षर शामिल होना चाहिए, प्रत्येक व्यक्ति या

संदिग्ध का नाम और वस्तु का संक्षिप्त विवरण। निर्विवाद रूप से, ये "बिना किसी देरी के" और "हिरासत की श्रृंखला" पहलू जो इस तरह के साक्ष्य की जीवंतता के लिए अपरिहार्य हैं, नहीं थे। अनुपालन किया। ऐसी स्थिति में, यह अदालत डी. एन. ए. रिपोर्ट Ext.85 को इतना भरोसेमंद नहीं मान सकती कि किसी को उसके पास भेज सके।

इस आधार पर फांसी दी जाती है। वर्तमान मामले में, भले ही एक रिपोर्ट के माध्यम से डी. एन. ए. साक्ष्य मौजूद था, इसकी विश्वसनीयता अचूक नहीं है, विशेष रूप से इस तथ्य के आलोक में नहीं कि

इस तरह के साक्ष्य की असम्बद्ध प्रकृति स्थापित नहीं की जा सकती है। और अन्य कि ठोस साक्ष्य लगभग पूरी तरह से अनुपस्थित है। [पैरा 52,54,56,58,61-63 और 66] [173-A-B; 174-D-E, F-G; 176 B-G; 179-C-D]

संग्रह, भंडारण और परिवहन के लिए दिशानिर्देश

जाँच अधिकारी के लिए अपराध स्थल डीएनए नमूने

केंद्रीय फॉरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला निदेशालय

फॉरेंसिक विज्ञान सेवा गृह मंत्रालय,
सरकार, भारत का-संदर्भित।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

1.3 तत्काल मामले में, जांच के कारण

अधिकारियों को बार-बार पीडब्लू 6 से पीडब्लू 12 और फिर पीडब्लू 13 में बदल दिया गया, यह आश्चर्यजनक और अस्पष्ट है। यह निर्णय लेने का कोई कारण नहीं दिया गया है कि धारा 53ए, Cr.P.C के प्रावधानों का पालन करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। ; एकत्र किए गए नमूनों को विश्लेषण के लिए भेजने में अस्पष्ट देरी हुई है; एक परिसर की पहले ही तलाशी ली गई थी, फिर से तलाशी ली गई थी, जिसका कारण रिकॉर्ड से नहीं लिया गया है; ताला पंचनामा तैयार नहीं किया गया है; अपीलार्थी के रक्त और वीर्य का कोई नमूना किसी भी चिकित्सा या परा चिकित्सा कर्मचारी द्वारा नहीं लिया गया है; कथित रूप से गिरफ्तारी के एक महीने से अधिक समय बाद अपीलार्थी से एक अतिरिक्त नमूना लिया गया है; अपीलार्थी के कथित प्रकटीकरण बयान को कभी भी पढ़ा नहीं गया और अपीलार्थी को उसकी स्थानीय भाषा में समझाया नहीं गया; अपीलार्थी कथित रूप से अपना निवास स्थान होने के स्थान पर अकेला नहीं रह रहा था; और अपीलार्थी के पहले मामले में संदिग्ध होने का आधार क्या था, यह एक रहस्य बना हुआ है; ऐसे व्यक्ति जिन्होंने प्रकाश डाला होगा। इस तरह की बहुआयामी खामियों ने इस तरह के बर्बर कृत्य करने वाले को पूर्ण जोखिम में दंडित करने की खोज से समझौता किया है। अपीलार्थी पर लगाए गए आरोप साबित नहीं हुए [पैरा 77 और 79] [180 जी-एच; 181-ए-सी]

शरद बर्डहिचंद सारदा बनाम। महाराष्ट्र राज्य (1984) 4 एससीसी 116: [1985] 1 एस. सी. आर. 88; इंद्रजीत दास बनाम। त्रिपुरा राज्य 2023 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 201; कृष्ण

कुमार मलिक बनाम। हरियाणा राज्य (2011) 7 एससीसी 130: [2011] 8 एस. सी. आर. 774; राजेंद्र प्रहलादराव वासनिक बनाम। महाराष्ट्र राज्य (2019) 12 एससीसी 460: [2018] 14 एससीआर 585; पट्टू राजन बनाम। टी. एन. राज्य (2019) 4 एस. सी. सी. 771; मनोज बनाम. एम. पी. राज्य (2023) 2 एस. सी. सी. 353;

माघवेंद्र प्रताप सिंह @Pankaj सिंह बनाम। छत्तीसगढ़ राज्य 2023 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 486-पर निर्भर था।

मामला कानून संदर्भ

[1985] 1 एससीआर 88

पैरा 24

उस पर भरोसा करें

[1953] एससीआर 589

पीछा किया।

पैरा 44

[2011] 8 एससीआर 774

उस पर भरोसा करें

पैरा 57

[2018] 14 एससीआर 585

उस पर भरोसा करें

पैरा 57 प्रकाश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद बनाम। महाराष्ट्र राज्य

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय: आपराधिक अपील

नं. 1636-1637 2023 तक।

2015 के सी. आर. एल. ए. पी. No.88,2014 के सी. ओ. एन. एफ. सी. संख्या 4 और 2010 के एस. सी. No.407 में दिनांकित 13.10.2015 निर्णय और आदेश से और दिनांकित

14.10.2015 बॉम्बे में न्यायिक उच्च न्यायालय के 2014 के सी. ओ. एन. एफ. सी. संख्या 4 और 2015 के सी. आर. एल. ए. पी. No.88 में।

बी. एच. मालांपल्ले, वरिष्ठ अधिवक्ता।, सुश्री प्रतीक्षा बसरकर, रिशद अहमद चौधरी, अविनाश कुमार सौरभ, सुश्री अनुजा मिश्रा, अधिवक्ता। के लिए

सिद्धार्थ धर्माधिकारी, आदित्य अनिरुद्ध पांडे, भरत बागला, सुश्री श्रेया सक्सेना, सुश्री यामिनी सिंह, सौरव सिंह, अधिवक्ता। के लिए उत्तरदाता।

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

संजय करोल, जे।

छुट्टी दे दी गई।

2. निम्नलिखित मुद्दे वर्तमान में विचार के लिए उत्पन्न होते हैं।

अपील:

क्या किसी प्रकटीकरण कथन का गैर-अभिलेखन

1)

अपीलार्थी जिस भाषा में इसे बनाया गया है और उसे ऐसी भाषा में दर्ज किया गया है जो अपीलार्थी के लिए पूरी तरह से अज्ञात है, जिसकी सामग्री को भी पढ़ा नहीं गया है और उसे समझाया नहीं गया है, यह कहा जा सकता है कि इसने न्याय के कारण के लिए कोई पूर्वाग्रह पैदा किया है?

क्या डी. एन. ए. साक्ष्य एकल आधार बना सकते हैं

2)

अपीलार्थी के अपराध का निर्धारण?
क्या परिस्थितियों की पहचान की गई है और उन पर भरोसा किया गया है

3)

अभियोजन पक्ष वास्तव में केवल अपीलार्थी के अपराध की ओर इशारा करता है, जिससे किसी अन्य व्यक्ति की किसी भी और अन्य सभी संभावनाओं को बंद कर दिया जाता है।

द फैक्टुअल प्रिज्म

3. एफ़. आई. आर. सं. 109/2010 दिनांक 12.6.2010 के अनुसार यहाँ पंजीकृत है।

पी. एस. भायंदर (ठाणे, महाराष्ट्र), अपीलार्थी प्रकाश निषाद @केवट जिनक निषाद पर अपराध करने का आरोप लगाया गया था।

भारतीय दंड संहिता, 1860 (संक्षेप में 'आई. पी. सी.') की धारा 376, 377, 302 और 201 के तहत दंडनीय। ट्रायल कोर्ट ने दिनांकित [2023] 8 एस. सी. आर. के फैसले को देखा।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

27.11.2014 सत्र मामला No.407/2010 में प्रस्तुत, सभी अपराधों के संबंध में अभियुक्त को दोषी ठहराया और मृत्युदंड लगाया

आई. पी. सी. की धारा 302 के तहत आरोप के लिए सजा और अन्य अपराधों के लिए कारावास की सजा। निचली अदालत द्वारा लगाए गए वाक्यों का एक सारणीबद्ध प्रतिनिधित्व नीचे दिया गया है:

वैधानिक प्रावधान

अपीलार्थी पर सजा का अधिरोपण

एस. नं.

भारतीय दंड के तहत

कोड, 1860

आजीवन कारावास और एक लाख रुपये का जुर्माना। 1,000 . डिफ़ॉल्ट रूप से।

धारा 376

1 .

3 महीने की अवधि के लिए कठोर कारावास। आजीवन कारावास और एक लाख रुपये का जुर्माना। 1000. डिफ़ॉल्ट रूप से।

धारा 377

2 .

3 महीने की अवधि के लिए कठोर कारावास। मृत्युदंड और एक लाख रुपये का जुर्माना। 3,000 . डिफ़ॉल्ट रूप से,

3 .

धारा 303

9 महीने की अवधि के लिए कठोर कारावास। 7 साल के लिए कठोर कारावास और रुपये का जुर्माना।

4.

1,000 . चूक में, कुछ समय के लिए कठोर कारावास

3 महीने की अवधि।

4. मृत्यु सहित तथ्य और दृढ़ विश्वास के ऐसे निष्कर्ष

बॉम्बे उच्च न्यायालय द्वारा लगाई गई सजा की पुष्टि की गई थी, जो दोनों कार्यवाहियों में पहला अपील न्यायालय था। संदर्भ का उत्तर दिनांक 13-14.10.2015 के सामान्य निर्णय के संदर्भ में भी दिया गया था।

आपराधिक अपील No.88/2015 और आपराधिक पुष्टि मामला संख्या 4/2014 में प्रस्तुत किया गया।

अतः, अपीलार्थी द्वारा प्रस्तुत वर्तमान अपीलें।

5. निचली अदालतों ने समवर्ती रूप से अभियोजन पक्ष को पाया कि

उचित संदेह से परे मामले को स्थापित किया, यानी, अपीलार्थी ने एक नाबालिग लड़की (छह साल की उम्र) का यौन उत्पीड़न करने के बाद उसे मार डाला। इसके अलावा, सबूतों को नष्ट करने के प्रयास में उसे एक 'नाला' (नाली) में फेंक दिया और अपराध के भौतिक सबूतों को छिपा दिया।

6. सीमा पर, हम इंगित कर सकते हैं कि यह एक मामला है

परिस्थितिजन्य साक्ष्य, क्योंकि किसी ने भी उस अपराध को नहीं देखा है जिसके लिए अपीलार्थी पर आरोप लगाया गया है। अभियोजन पक्ष का मामला मुख्य रूप से नेत्र साक्ष्य पर आधारित नहीं है, बल्कि अपीलार्थी के इकबालिया बयान पर आधारित है, जिससे दोषपूर्ण लेखों की बरामदगी होती है और वैज्ञानिक विश्लेषण के माध्यम से उसके अपराध को स्थापित किया जाता है। अभियोजन पक्ष (निकर) के अंडरगारमेंट्स और अभियोजन पक्ष की योनि स्मीयर स्लाइड पर पाए गए अपीलार्थी के वीर्य का उल्लेख करते हुए डीएनए विश्लेषण रिपोर्ट मामले की शीट-एंकर है।

कैश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद बनाम। महाराष्ट्र राज्य [संजय करोल, जे.]

7. हम अब अभियोजन पक्ष के मामले की जांच करने के लिए आगे बढ़ते हैं, जैसा कि है

अभियोजन पक्ष के गवाहों की गवाही के माध्यम से। हालांकि,

आसानी से, अभियोजन पक्ष के 13 गवाहों को एक सारणी में दिया गया

जिनका वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है:

1)

चिकित्सा परीक्षक की गवाही, यानी पीडब्लू 4-डॉ. अंजलि फुंसी (Ext.27);

स्वतंत्र गवाहों की गवाही, अर्थात पीडब्लू 1 -

2)

मुस्ताकिन मोहम्मद इस्माइल शेख, पिता (एक्स. 18), पीडब्लू 2 -

रेहानाबानो, माँ (Ext.20) और पीडब्लू 3-फलीम अहमद

इब्राहिम शेख, चाचा (Ext.21) (सभी उनके रिश्तेदार हैं।

अभियोजक);

3)

जाँच अधिकारी की गवाही, अर्थात पीडब्लू 6-उप

इंस्पेक्टर सुरेश गणपत चिल्लावर, प्रथम जाँच अधिकारी

पीडब्लू 12-ए. पी. आई. सुधीर शांताराम, द्वितीय जाँच अधिकारी
(Ext.65) और पीडब्लू 13-पुलिस उपायुक्त

और
गवाहों की गवाही

दोषारोपण की वसूली के लिए

4)

लेख, अर्थात, पीडब्लू 5-बिपिन सोहनलाल बाफना (Ext.34), पीडब्लू 7

सुरेश जगदीश खंडेलवाल (Ext.46), पीडब्लू 8-विशाल

नवीन चंद्र साहा (Ext.49), पीडब्लू 9-विजय सुदामा सोनी
(Ext.53) और पीडब्लू 10-रामलखन जयसवाल (Ext.54), जो
पंच गवाह हैं।

प्रकार

अभियोजन पक्ष का गवाह मुस्ताकिन मोहम्मद। इस्माइल

अभियोजक के पिता

शेख।

अभियोजक की माँ

रेहानाबानो मोहम्मद।

शेख

अभियोजक के चाचा

फलीम अहमद इब्राहिम

शेख

डॉ. अंजलि पिंपल

चिकित्सा परीक्षक

बिपिन सोहनलाल बाफना

तलाशी के लिए पंच गवाह

13.06.2010

एस. आई. सुरेश गणपत

प्रथम जाँच अधिकारी-संचालित

चित्लावर

12.06.2010 पर खोजें

सुरेश जगदीश

पंच गवाह-तलाशी के लिए

खंडेलवाल

16.06.2010

विशाल नवीन चंद्र

पंच गवाह-तलाशी के लिए

साहा

आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

विजय सुदामा सोनी

पंच गवाह-अपराध स्थल पर गवाह

पीडब्लू 9

12.06.2020

रामलखन जयसवाल

पंच गवाह-अपराध स्थल पर गवाह

पीडब्लू 10

12.06.2020

हेड कांस्टेबल-पंजीकृत रिपोर्ट

पीडब्लू 11

अशोक सोनार

12.06.2010

ए. पी. आई. सुधीर शांतारन

द्वितीय जाँच अधिकारी-संचालित

पीडब्लू 12

कुडालकर

13.06.2010 और 17.06.2010 पर खोजें।

उपायुक्त

तीसरा जाँच अधिकारी-संचालित

पीडब्लू 13

पुलिस, दीपक

16.06.2010 और 17.06.2010 पर खोजें

पुंडलिक देवराज

8. अभियोजक का जन्म पीडब्लू 1 और पीडब्लू के विवाह से हुआ था।

2 और घटना के समय, यानी 11.6.2010 पर, वह सिर्फ 6 साल की थी। न तो उसकी पहचान, और न ही इस तथ्य पर विवाद है कि उसकी मृत्यु गंभीर पूर्व-शव परीक्षण चोटों के परिणामस्वरूप हुई थी।

9. डॉ. अंजलि पिंपल (पीडब्लू 4), जिन्होंने शरीर की जांच की

अभियोजक ने उसके द्वारा किए गए पोस्टमॉर्टम और उसकी मेडिकल रिपोर्ट (Ext.28) तैयार करने के तथ्य की गवाही दी है। शपथ पर एक गवाह के रूप में, उसने गवाही दी है कि अभियोजक को उसके शरीर पर कई चोटें (कुल 15) आईं, जिसमें उसके दोनों निजी अंग शामिल हैं। निस्संदेह ऐसी चोटें गंभीर, गंभीर और गंभीर प्रकृति की होती हैं। इस प्रकार, अभियोजन पक्ष ने हत्या के मामले को किसी भी संदेह से परे स्थापित किया है।

10. विचार के लिए जो प्रश्न उत्पन्न होता है वह है: किसके बारे में

कायरतापूर्ण अपराध किया? क्या यह केवल अपीलार्थी था या कोई और?

और?

11. ऐसे तथ्य का पता लगाने के लिए, अब हम जांच करने के लिए आगे बढ़ते हैं

अभियोजन मामला जैसा कि विभिन्न चरणों में निर्धारित किया गया है, चाहे वह जांच हो या मुकदमा।

12. एफ़. आई. आर. दिनांकित 12.6.2010 (Ext.44), इस प्रकार दर्ज की गई

पीडब्लू 1 की शिकायत (एक्स. 19 जो एक्सट का हिस्सा है। 1), रिकॉर्ड करता है कि 12 जून, 2010 की सुबह अभियोजक का शव था

उसके घर के पास नाला में तैरता हुआ पाया गया। एक "अज्ञात व्यक्ति" द्वारा उसका यौन उत्पीड़न और हत्या कर दी गई थी, जिसके बाद इस तरह के हमले के सबूतों को नष्ट करने के उद्देश्य से शव को नाले में फेंक दिया गया था।

13. उल्लेखनीय है कि इस स्तर पर किसी पर संदेह नहीं है। उक्त एफ़. आई. आर.

पुलिस अधिकारी-पीडब्लू 11 द्वारा दर्ज किया गया था। जांच के नतीजे

इसका संचालन तीन लोगों-पीडब्लू 6, पीडब्लू 12 और पीडब्लू 13 द्वारा किया गया था।

14. पंच की उपस्थिति में पीडब्लू 6 (प्रथम जांच अधिकारी)

गवाह-पीडब्लू 9 और पीडब्लू 10 ने अभियोजक प्रकाश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद बनाम का शव बरामद किया।

महाराष्ट्र राज्य [संजय करोल, जे.]

जाँच अधिकारी ने केवल घटनास्थल की तलाशी ली। उनकी भूमिका यहीं समाप्त हो जाती है। 15. इसके बाद, पीडब्लू 12 (दूसरा जांच अधिकारी) ने कुछ सूचनाओं (खुलासा नहीं किया गया) के आधार पर, अपीलार्थी को उसके कार्यस्थल से 13.6.2010 पर गिरफ्तार किया और दो स्वतंत्र लोगों की उपस्थिति में उसके घर की तलाशी ली।

गवाह, अर्थात्, पीडब्लू 5 और पीयूष रमेश कुमार जैन (पूछताछ नहीं की गई)। तलाशी के परिणामस्वरूप कुछ आपत्तिजनक वस्तुओं की बरामदगी हुई ज्ञापन Ext.35। अपीलार्थी इस तरह की खोज से किसी भी तरह से जुड़ा नहीं था।

16. इसके बाद, आगे की जांच पीडब्लू 13-पुलिस उपायुक्त (तीसरे जांच अधिकारी) को सौंपी गई, जो,

अपीलार्थी के प्रकटीकरण बयान के आधार पर, दो स्थानों पर तलाशी ली गई, जिसमें अपीलार्थी के घर की पहले 13.6.2010 पर तलाशी ली गई थी। इस तरह की तलाशी 16 और 17 जून, 2010 को की गई, जिससे अपीलार्थी को अपराध से जोड़ने वाले कुछ आपत्तिजनक लेख बरामद हुए, जो वैज्ञानिक विश्लेषण के माध्यम से फोरेंसिक विशेषज्ञों द्वारा तैयार किए गए डीएनए रिपोर्ट (Ext.85 और 86) में स्थापित हुए। जाँच अधिकारी को अपीलार्थी के वीर्य के धब्बों के आकार में, अभियोजक की योनि स्मीयर स्लाइड पर और अपीलार्थी के बनियन (बनियान) पर अभियोजक के खून के धब्बे पाए गए, जो अपीलार्थी को अपराध से जोड़ते हैं। इस प्रकार, जांच पूरी होने पर, मुकदमे के लिए अदालत में चालान पेश किया गया।

17. उपरोक्त पृष्ठभूमि में, अब हम ऊपर वर्गीकृत किए गए गवाहों की गवाही की जांच करने के लिए आगे बढ़ते हैं।

18. शपथ पर, पीडब्लू 1, (अभियोजक के पिता) स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं कि उन्होंने किसी भी व्यक्ति पर कोई संदेह व्यक्त नहीं किया था

बेटी की मौत। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि "मुझे अपनी बेटी की मृत्यु के बारे में किसी पर कोई संदेह नहीं था"। उन्होंने अपीलार्थी को पहचाना, जो उक्त गवाह के अनुसार, उसी "चॉल" में रहता था। उनकी गवाही इस तथ्य का संकेत है कि 11.6.2010 की शाम को, उनकी 6 साल की बेटी (अभियोजक), रात का खाना खाने के बाद घर से निकल गई। उसे घर नहीं लौटने पर उसने उसकी तलाश की और पाया

उसे उसके घर के पास एक "नाली" में मृत होने के लिए। बाद में, वह कहता है कि 14.6.2010 से पहले, उसे अपीलार्थी पर अपराध करने का संदेह नहीं था

अपराध। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस तरह के संदेह की तारीख और आधार का खुलासा उनके द्वारा नहीं किया गया है। 19. उनके बयान के अन्य पहलुओं, विशेष रूप से, निकर की बरामदगी के संबंध में उनके बयान पर अलग से विचार किया जाएगा। उन्होंने निकर (अनुच्छेद 10) को अपनी बेटी के रूप में मान्यता दी।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

20. पी. डब्ल्यू. 2, अभियोजक की माँ, की पुष्टि करते हुए

उसके पति की गवाही में कहा गया है कि 14.6.2010 तक उसे पता नहीं था कि उसकी बेटी पर हमला और हत्या किसने की थी। हालाँकि, अदालत में, उसने गवाही दी कि उसने अपीलार्थी को उसके अनुरोध पर, 12.6.2010 के शुरुआती घंटों में एक माचिस का डिब्बा दिया था।

22. यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि किसी भी रिश्तेदार ने अपराध में अपीलार्थी की संलिप्तता या उसके प्रति अपने संदेह के कारण का खुलासा नहीं किया है, विशेष रूप से 14.6.2010 पर जो घटना के दो दिन बाद था।

23. परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर कानून अच्छी तरह से स्थापित है। जब कोई मामला ऐसे साक्ष्य द्वारा नियंत्रित होता है, तो साक्ष्य को अपीलार्थी के अपराध की ओर एकमात्र रूप से इंगित करना चाहिए, जिससे अन्य सभी परिकल्पनाओं की संभावना समाप्त हो जाती है।

24. इस विषय पर लोकस क्लासिकस शरद बर्डहिचंद सारदा बनाम है। महाराष्ट्र राज्य 1. इस न्यायालय का एक हालिया फैसला

हममें से एक (विक्रम नाथ, जे.) द्वारा लिखित इंद्रजीत दास बनाम में परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर अच्छी तरह से स्थापित कानून पर प्रकाश डाला गया है। त्रिपुरा राज्य 2, स्वर्णिम सिद्धांतों को दोहराते हुए, निम्नानुसार:

" 10. वर्तमान मामला परिस्थितिजन्य साक्ष्य का है क्योंकि किसी ने अपराध होते नहीं देखा है। परिस्थितिजन्य साक्ष्य के मामले में कानून अच्छी तरह से स्थापित है। प्रमुख मामला

शरद बर्डहिचंद सारदा बनाम। महाराष्ट्र राज्य। इसके अनुसार, परिस्थितियाँ निश्चित रूप से अभियुक्त के अपराध की ओर इशारा करने वाली एक निश्चित प्रवृत्ति की होनी चाहिए;

संचयी रूप से ली गई परिस्थितियों को एक ऐसी श्रृंखला बनानी चाहिए जो इतनी पूर्ण हो कि इस निष्कर्ष से कोई बच न सके कि सभी मनुष्यों के भीतर संभावना है कि अपराध अभियुक्त द्वारा किया गया था और उन्हें अभियुक्त के अपराध के अलावा किसी भी परिकल्पना पर स्पष्टीकरण देने में असमर्थ होना चाहिए और उसकी बेगुनाही के साथ असंगत होना चाहिए। उक्त सिद्धांत शरद बर्डहिचंद के मामले में निर्धारित किया गया है।

2 2023 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 201 आकाश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद बनाम।
महाराष्ट्र राज्य [संजय करोल, जे.]

इस न्यायालय द्वारा सारदा (उपरोक्त) का लगातार पालन किया गया है। ए में

हाल का मामला-शैलेंद्र राजदेव पासवन बनाम। गुजरात राज्य,

इस न्यायालय ने कहा कि परिस्थितिजन्य साक्ष्य के मामले में, कानून दो गुना आवश्यकताओं को स्वीकार करता है। सबसे पहले, कि परिस्थितियों की श्रृंखला में प्रत्येक कड़ी के अपराध को स्थापित करने के लिए आवश्यक है

अभियोजन पक्ष द्वारा अभियुक्त को उचित से परे स्थापित किया जाना चाहिए।

संदेह और दूसरी बात, सभी परिस्थितियाँ सुसंगत होनी चाहिए।

केवल अभियुक्त के अपराध की ओर इशारा करना। हमें अन्य निर्णयों का उल्लेख करके इस निर्णय पर बोझ डालने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उपरोक्त सिद्धांतों का लगातार पालन किया गया है और इसके द्वारा अनुमोदित किया गया है।

बार-बार अदालत। "

25. अपीलार्थी के अपराध को स्थापित करने के लिए, अभियोजन पक्ष निर्भर करता है

निम्नलिखित परिस्थितियाँ:

अपीलार्थी उसी चॉल में रह रहा था जिसमें

अ)

अभियोजक;

ख) अपीलार्थी अपराध स्थल के पास पाया गया था;

अपीलार्थी ने प्रकटीकरण बयान दिए, अर्थात दिनांकित

(ग)

16.6.2010 Ext.47 और दिनांकित 17.6.2010 Ext.50, जिसके कारण ज्ञापन संख्या के माध्यम से आपत्तिजनक लेखों की बरामदगी हुई। Ext.48

और Ext.51। अपीलार्थी के घर और किसी अन्य स्थान से जहाँ उसने अपने कपड़े छिपाए थे।

और अभियोजक;

वैज्ञानिक विश्लेषण पर तैयार की गई डी. एन. ए. रिपोर्ट

(घ)

विशेषज्ञ, अपीलार्थी के बंदी पर अभियोजक का रक्त और अभियोजक के कपड़ों पर उसका वीर्य स्थापित करना

और उसकी योनि स्मीयर स्लाइड।

26. आइए हम जाँच करें कि क्या ये सभी परिस्थितियाँ स्थिर हैं।

अभियोजन पक्ष द्वारा आरोपित किया गया या नहीं।

'चॉल' में रहने वाले 13 लोगों की स्थिति देखी जा रही है

अपराध का पात्र

27. पीडब्लू 1 और पीडब्लू 2 ने कहा कि अपीलार्थी ने

उनके रूप में चल, हालांकि उन्होंने उनके घर की पहचान नहीं की। खैर, बस इतना ही नहीं। उनके वहाँ रहने का कोई अन्य प्रमाण नहीं है। भले ही माँ का अपीलार्थी को देखने और उसे देने का अधिकार एचबॉक्स, 12.6.2010 के शुरुआती घंटों में, माना जाता है कि अभियोजन पक्ष के मामले में आगे ऐसा नहीं है। अपीलार्थी [2023] 8 एस. सी. आर. नहीं था।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

उस स्थान पर पाया गया जहाँ कथित अपराध हुआ था या उस स्थान पर जहाँ से शव बरामद किया गया था। अभियोजन पक्ष अपराध के दो स्थानों और उस स्थान के बीच की दूरी स्थापित करने में सक्षम नहीं है जहां अपीलार्थी को सुबह देखा गया था। इस प्रभाव के लिए कोई स्पॉट मैप या कोई नेत्र साक्ष्य नहीं है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, किस बात ने इन गवाहों को अपीलार्थी को अपराध करने का पता लगाने के लिए प्रेरित किया, यह स्पष्ट नहीं है। यह केवल द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर है

पीडब्लू 1 ने अपीलार्थी पर अपना संदेह व्यक्त करते हुए कहा कि उसे 13.6.2010 पर गिरफ्तार किया गया था और उसी दिन उसके आवास की तलाशी ली गई थी। यही वह जगह है जहाँ अभियोजन पक्ष के मामले में प्रमुख विरोधाभास, यदि झूठ नहीं, उभरता है। जाँच अधिकारी पीडब्लू 12 ने स्पष्ट रूप से अपीलार्थी पर केवल अभियोजक के पिता यानी पीडब्लू 1 द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर संदेह किया है। पीडब्लू 12 में कहा गया है कि "मृतक के पिता ने अपीलार्थी के खिलाफ संदेह व्यक्त किया और उसके घर की तलाशी ली गई।" और पीडब्लू 1 का कहना है कि "उसने 14.6.2010 से पहले किसी पर संदेह नहीं किया था।" तलाशी 13 तारीख को ली गई थी न कि 14 जून, 2010 को। उन्होंने कहा कि अपीलार्थी के घर को बंद पाए जाने पर, उन्होंने चिकित्सा विश्लेषक, मुंबई को फोन किया, जिसके बाद, उन्होंने अपीलार्थी के घर का ताला तोड़कर, 13.6.2010 पर Ext.36 के माध्यम से आपत्तिजनक वस्तुएं बरामद कीं और ऐसी वस्तुएं थीं:

"	अनुच्छेद	1-वर्गाकार	कार्डबोर्ड;
अनुच्छेद 2-कंबल;			
अनुच्छेद 3-फर्श टाइलों के टुकड़े;			
अनुच्छेद 4-मैट;			अनुच्छेद 5-टावल;
अनुच्छेद 6-विस्तारक;			
अनुच्छेद 8-मैट; और			अनुच्छेद 9-
तकिया "			

28. पीडब्लू 5 और पीयूष रमेश कुमार जैन (बिना जांच के) की उपस्थिति में तलाशी लेने के बाद, उन्होंने घर को बंद कर दिया और सील कर दिया। घर। दोनों में से अभियोजन पक्ष ने केवल एक गवाह पी. डब्ल्यू. 5 से पूछताछ की। इस गवाह के साथ-साथ जांच अधिकारी और अभियोजक के रिश्तेदारों की गवाही का अवलोकन, एक प्रमुख तथ्य को स्थापित नहीं करता है, कि वह व्यक्ति जिसने वास्तव में अपीलार्थी के घर की पहचान की थी।

प्रकाश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद बनाम। महाराष्ट्र राज्य [संजय करोल, जे.]

29. एक 'चॉल' मकानों का एक समूह है जो एक साथ समूहबद्ध होता है, आकार में बहुत छोटा और घनी आबादी वाला होता है। यह एक सस्ता आवास है, कुछ के लिए अस्थायी, दूसरों के लिए स्थायी। एक ही चॉल में रहना, उपस्थित तथ्यों में नहीं हो सकता है कि किसी ने भी अपीलार्थी के सटीक घर/कमरे की निश्चितता के साथ पहचान नहीं की है, एक ऐसी परिस्थिति जो अपीलार्थी के अपराध की ओर इशारा करती है। जैसा कि निर्दिष्ट निर्णयों (ऊपर दिए गए) से स्पष्ट है, किसी परिस्थिति को स्थापित करने के लिए, कोई संदेह नहीं होना चाहिए; यह इस संभावना के लिए जगह नहीं छोड़ना चाहिए कि अपीलकर्ता ने नहीं, जिसके खिलाफ परिस्थिति साबित करने की कोशिश की गई है, लेकिन किसी और ने उक्त अपराध किया होगा।

30. किसी भी गवाह ने यह बयान नहीं दिया है कि यह अपीलार्थी के कहने पर था कि अभियोजक ने घर छोड़ दिया, और न ही किसी ने

अपीलार्थी और अभियोजक को किसी भी समय एक साथ देखने के प्रभाव से अपदस्थ; अपीलार्थी पीडब्लू 1 के घर का आगंतुक भी नहीं था। उनका कोई संबंध नहीं है, चाहे वह किसी भी प्रकृति का हो। बस इतना कहा गया है कि रात का खाना खाने के बाद अभियोजक घर से चला गया, और पीडब्लू 3 कहता है कि उसे लगा कि वह टीवी देखने के लिए पड़ोसी के घर गई होगी। इस मामले के साथ, अंतिम बार देखा गया सिद्धांत, व्यवहार में नहीं आता है। यद्यपि हमारे समक्ष तर्क दिया गया है, विचारण न्यायालय ने सही ढंग से नहीं किया है

उसी को परिणाम की परिस्थिति माना जाता है, दोनों में से दिशा।

अपीलार्थी का परिस्थिति प्रकटीकरण वक्तव्य

और दोषपूर्ण लेखों की वसूली 31. पीडब्लू 12 और पीडब्लू 13 की गवाही को संयुक्त रूप से पढ़ने से अभियोजन पक्ष का मामला स्वाभाविक रूप से असंभव हो जाता है, यदि यह स्वयं विरोधाभासी नहीं है और इस परिस्थिति में असंभव है।

32. पीडब्लू 5 के विपरीत, जो अपीलार्थी के घर में खून से सना निकर देखने के बारे में स्पष्ट है, पीडब्लू 12 इसका खुलासा नहीं करता है।

ऐसा तथ्य। निर्विवाद रूप से, ये दोनों गवाह एक साथ केवल एक बार अपीलार्थी के कथित घर गए, यानी 13.6.2010 पर। यह रिकॉर्ड की बात है कि पुलिस ने अभियोजक से संबंधित केवल एक निकर बरामद किया, जो 16.6.2010 पर की गई दूसरी तलाशी के समय बरामद किया गया था, जो पीडब्लू 9 की उपस्थिति में पीडब्लू 13 द्वारा वसूली को बेहद संदिग्ध बनाता है, विशेष रूप से जब खोज और बाद में आपत्तिजनक वस्तुओं की बरामदगी का खंडन किया जाता है।

33. एक और विरोधाभास है जो उपस्थित तथ्यों में महत्व रखता है और यह कि लेखों [2023] 8 एस. सी. आर. की जब्ती का समय है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

पहली खोज के दौरान बरामद किया गया। द पंचनामा (एक्स. 36) से पता चलता है कि इसे रात 9 बजे से रात 9:30 बजे के बीच तैयार किया गया था, जबकि पीडब्लू 5 के अनुसार, वसूली की सभी कार्यवाही दोपहर 2 बजे से दोपहर 2.30 बजे से पहले पूरी हो गई थी, जिस समय तक गवाह घर लौट चुका था। वास्तव में, खोज के तथ्य पर ही संदेह है क्योंकि पीडब्लू 5 स्पष्ट रूप से बताता है कि खोज करने के बाद उन्होंने उस पुलिस थाने का दौरा किया जहां उनके "हस्ताक्षर" प्राप्त किए गए थे, हालांकि, वे स्पष्ट करते हैं कि पहले भी उनके हस्ताक्षर लिए गए थे, लेकिन किस कागज पर और किस उद्देश्य के लिए, उन्होंने इसका खुलासा नहीं किया।

34. अब हम पीडब्लू 13 की गवाही के लिए आगे बढ़ सकते हैं, जो

अभियोजन पक्ष का प्रमुख गवाह, अर्थात् जाँच अधिकारी। उनके बयान के अनुसार, 16.6.2010 पर, अपीलार्थी ने पुलिस हिरासत में रहते हुए, स्वतंत्र गवाहों पीडब्लू 7 और पी. के. मेहता (पूछताछ नहीं की गई) की उपस्थिति में एक प्रकटीकरण बयान (Ext.47) दिया। बयान से पता चलता है कि अपीलार्थी ने अभियोजक के निकर को छुपाया था और साथ ही उसका भी

घटना के समय उसके द्वारा पहने गए कपड़े, उसके घर में, जिसे वह पहचानने और बरामद करने के लिए तैयार था।

35. तदनुसार, पंचों के साथ 16.6.2010 PW 13 पर,

कर्मचारी और अपीलार्थी ने गणेश देवल नगर के कमरे No.39 की तलाशी ली। कमरा खोला गया और अपीलार्थी ने "अमूल गोल्ड 45 साइज़ निकर" और एक "अमूल गोल्ड 80 सेमी साइज़ बनियन का सफेद रंग का निकर" पेश किया, जिसमें खून के दाग थे और एक "ग्रे रंग का बरमूडा" और एक "भूरे रंग का निकर जिसमें सोफिया 65 सेमी के रूप में लिखा था" और कुछ खून के दाग थे। उक्त वस्तुओं को मेमो Ext.48 के माध्यम से जब्त किया गया था।

उपस्थिति

पंचों से। आई. डी. 1 पर अपीलार्थी ने हिरासत में रहते हुए दूसरा खुलासा बयान दर्ज कराया, जिसमें उसने कहा कि कुछ अतिरिक्त कपड़े जो उसने घटना के दिन पहने थे, उन्हें बरामद किया जा सकता है। तदनुसार, इस तरह के बयान Ext.50 दिनांक 17.6.2010 के आधार पर, पुलिस दल ने अपीलार्थी के साथ आगे बढ़कर वालिव नाका से लगभग दो किलोमीटर दूर दीपश्री भवन में कमरे No.206 की तलाशी ली। एक गणेश भीम (गणेश कपिलदेव) मिश्रा ने कमरे का दरवाजा खोला और अपीलार्थी द्वारा किए गए प्रकटीकरण के अनुसार, पुलिस ने मेमो (Ext.51) दिनांक 17.6.2010 के माध्यम से कुछ आपत्तिजनक लेख बरामद किए।

36. 17.6.2010 से पहले बरामद की गई सभी वस्तुओं के लिए भेजा गया था

वैज्ञानिक विश्लेषण Ext.68 और Ext.69 दोनों दिनांकित 16.6.2010 पत्रों के माध्यम से, अपीलार्थी के रक्त के नमूने को डीएनए प्रोफाइलिंग के लिए भेजा गया था। उन्होंने अपीलार्थी के रक्त, नाखून और बालों के नमूने एकत्र करने के लिए सिविल अस्पताल को एक पत्र भी भेजा। जाँच के दौरान, उन्होंने प्रकाश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद बनाम रिपोर्ट प्राप्त की।

महाराष्ट्र राज्य [संजय करोल, जे.]

रासायनिक विश्लेषण के साथ-साथ डीएनए रिपोर्ट और एफएसएल रिपोर्ट भी। एक विशेषज्ञ द्वारा तैयार की गई उक्त डी. एन. ए. रिपोर्ट में अभियोजक के निजी अंगों से निकाले गए स्वाब पर अपीलार्थी के "विसरा" (वीर्य) के नमूनों का पता चला। उन्होंने मुन्ना सरोज का बयान भी दर्ज किया, जो अपीलार्थी के साथ रहना। मुख्य परीक्षा का सार भी यही है।

इस गवाह से।

37. यह ध्यान दिया जा सकता है कि न तो इस गवाह ने और न ही किसी और ने अपीलार्थी की चिकित्सीय जांच के तथ्य को बयान किया है, जैसा कि दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 53ए के तहत निर्धारित किया गया है (इसके बाद,

' Cr.P.C. ')।

38. इसके अलावा, यह ज्ञात नहीं है कि क्या अपीलार्थी की चिकित्सा जांच के लिए उसके संचार का कभी भी पालन किया गया था। तो भी, इसके परिणामी परिणाम। अपीलार्थी के शरीर के अंगों के नमूने किसने लिए, यदि बिल्कुल भी हो, तो यह एक रहस्य है। अभिलेख इस तथ्य का खुलासा नहीं करता है। अदालत में गणेश भीमा और मुन्ना सरोज की गैर-जांच, गवाहों का हवाला दिए जाने के बावजूद, उनके बयान को अप्रमाणित बताती है, जिससे परिस्थितियों की श्रृंखला में अंतर पैदा होता है, जिससे यह पूरा नहीं हो पाता है। 39. जिस घर से आई. डी. 1 पर सामान बरामद किया गया था, वह न तो अपीलार्थी के स्वामित्व में था और न ही उसके अनन्य कब्जे में था। इसके बजाय, जैसा कि जांच अधिकारी द्वारा स्वीकार किया गया है, यह किसी तीसरे पक्ष का था। जाँच अधिकारी स्वीकार करता है कि उक्त घर पर एक गणेश भीम का कब्जा था, जिसकी मामले में कभी जाँच नहीं की गई थी, इसलिए यह भी कि मुन्ना सरोज ने 19.6.2010 पर क्यों और क्या खुलासा किया है, दिन की रोशनी नहीं देखी है। अपराध में उनकी संलिप्तता से भी इनकार नहीं किया गया है। इस मुद्दे पर आई. डी. 1 की जांच से पता चलता है कि जिस घर में अपीलार्थी रहता था, उसका मालिक मुन्ना लालचंद था।

40. इस गवाह की गवाही की सच्चाई को और कौन सी बात संदिग्ध बनाती है, वह प्रतिपरीक्षा भाग में सामने आई है, जिसमें वह स्वीकार करता है कि उसने बयान Ext.47 में उल्लेख नहीं किया है कि "आरोपी ने कपड़े छिपाए थे"। मामले के इस दृष्टिकोण में, इस तरह से खोजे गए लेखों को साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 के संदर्भ में एक खोज नहीं कहा जा सकता है। 41. उल्लेखनीय रूप से, पीडब्लू 7 की गवाही से यह स्पष्ट है कि अपीलार्थी मराठी भाषा नहीं जानता था क्योंकि वह कहता है कि "मुझे पता है कि अपीलार्थी मराठी नहीं जानता है"।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

42. पंच गवाह पीडब्लू 8 की गवाही की बारीकी से जांच

यह बताता है कि अपीलार्थी ने अपना बयान हिंदी में दिया था न कि मराठी में।

43. हालाँकि, पीडब्लू 13 इस तथ्य पर चुप है, लेकिन उक्त का अवलोकन

प्रकटीकरण बयान (Ext.47 और Ext.50) से पता चलता है कि यह मराठी में दर्ज किया गया है और जांच अधिकारी ने कभी भी अपीलार्थी को उसकी स्थानीय भाषा में इसकी सामग्री को नहीं पढ़ा या समझाया है। इसके परिणामस्वरूप, पुलिस द्वारा दर्ज किए गए बयान और बयान की शुद्धता के बारे में निश्चितता नहीं है।

44. इस न्यायालय की एक संविधान पीठ, सैयद कासिम रजवी बनाम।

हैदराबाद राज्य 3 ने निम्नलिखित उद्धरण में देखा कि जब वहाँ न्यायालय की भाषा की समझ की कमी है, यह अपीलार्थी के लिए पूर्वाग्रह का कारण बनती है। पीठ ने टिप्पणी की:

" 9. इसमें कोई संदेह नहीं है कि सामान्य अदालती कार्यवाही

यहाँ तक कि अधिकांश लोगों की बोली जाने वाली भाषा हैदराबाद राज्य। यदि किसी विशेष मामले में अभियुक्त नहीं है

कार्यवाही के लिए पर्याप्त व्यवस्थाओं का अभाव उसे उस भाषा में समझाया जाता है जिसे वह समझता है, वह पूर्वाग्रह से ग्रस्त है

उसके मुकदमे में, जाहिर है कि यह एक आधार हो सकता है जिस पर उठाया जा सकता है उसकी सजा के खिलाफ एक अपील में उसकी ओर से। लेकिन हमारी राय में

यह नहीं कहा जा सकता है कि विनियमन में प्रावधान से संबंधित

यदि न्यायाधिकरण चाहे तो अंग्रेजी में कार्यवाही की जा रही है स्वयं संविधान में समान संरक्षण खंड का उल्लंघन करता है।

(जोर दिया गया)

45. हाथ में मामले में, कानून का उपरोक्त प्रस्ताव है

चौकोर रूप से लागू। अभिलेख पर सामग्री के अवलोकन से हम पाते हैं कि अपीलार्थी को मराठी में पढ़ना और लिखना नहीं आता था। यह स्थिति होने के कारण, इस न्यायालय ने अपीलार्थी के अपने

खिलाफ अभियोजन के मामले को समझने में सक्षम होने के महत्व पर प्रकाश डाला है। ऐसा करने में असमर्थता, भाषा की बाधा के कारण अपीलार्थी के मामले में प्रतिकूल प्रभाव डालती है। अभिलेख पर यह दिखाने के लिए कुछ भी नहीं है कि अपीलार्थी के साथ-साथ अन्य लोगों के साक्ष्य दर्ज करना व्यावहारिक नहीं था, जिनकी स्थानीय भाषा मराठी नहीं थी, बल्कि हिंदी थी। मूल गवाही, जिससे उनकी गवाही के पाठ, सार और सही महत्व का अनुमान लगाया जा सकता है, इसका हिस्सा नहीं है

3 1953 एस. सी. आर. 589 प्रकाश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद बनाम। महाराष्ट्र राज्य [संजय करोल, जे.]

49. अभियोजक के निकर की बरामदगी के बिंदु पर भी इसके स्थान और संख्या के संबंध में विरोधाभास है। हम नोटिस करते हैं। कि दो स्वतंत्र गवाहों, अर्थात् पीडब्लू 9 और पीडब्लू 10 की उपस्थिति में शव बरामद किया गया था। उल्लेखनीय रूप से, पीडब्लू 9 में कहा गया है कि 12.6.2010 पर अभियोजक का शव नाला से बरामद किया गया था और "एक निकर टिन की छाया में पड़ा था। खून से लथपथ एक बनियन छत पर पड़ा था। वह आगे कहते हैं कि ठीक होने के बाद, शव को घर लाया गया था। उसका बलात्कार किया गया था "[यहाँ संदर्भ [2023] 8 एस. सी. आर. का है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

अभियोजक) और यह कि "लड़की के गुप्त भाग से खून निकला था"। वह यह नहीं कहता कि टिन की छाया अपीलार्थी के घर की थी। हालाँकि, पीडब्लू 1 ने बयान दिया है कि "मेरी बेटी का निक्कर आरोपी की छत पर पाया गया था"। लेकिन यह पूरी तरह से पीडब्लू 13 के बयान का विरोधाभास, जिसमें कहा गया था कि अपीलार्थी के प्रकटीकरण बयान के अनुसार निकर और बानियन बरामद किए गए थे। इस मुद्दे पर, पीडब्लू 10 की गवाही के माध्यम से और विरोधाभास सामने आता है जिसमें कहा गया है कि "उसके व्यक्ति पर कोई कपड़े नहीं थे" लेकिन अगली ही सांस में कहा गया है कि "उसने अपने व्यक्ति पर अंडरवियर पहना था", और यह भी कि "उसने मृत लड़की का शव नहीं देखा था"। इसके अलावा, पीडब्लू 10 में कहा गया है कि वह मराठी में पढ़ या लिख नहीं सकता है और उसने पुलिस स्टेशन में Ext.43 पर अपने हस्ताक्षर किए हैं जो मराठी में है। इसलिए, सत्य क्या है और किस पर विश्वास करना है, इसका अनुमान रिकॉर्ड से लगाना मुश्किल है।

वैज्ञानिक परीक्षण की परिस्थिति, विशेष रूप से वैज्ञानिक अधिकारी की डी. एन. ए. रिपोर्ट 50. हम मामले की जांच एक अन्य कोण से कर सकते हैं और यह कि क्या, भले ही तलाशी पर वसूली की गई हो।

13.6.2010 , 16.6.2010 और ऐसा माना जाता है कि या तो जाँच के दौरान पुलिस से प्राप्त जानकारी के आधार पर या अपीलार्थी द्वारा दिए गए बयान या किसी अन्य सामग्री के परिणामस्वरूप जाँच के दौरान पुलिस द्वारा प्राप्त, वही अपीलार्थी से जुड़ा हुआ है या नहीं।

51. हम पाते हैं कि इस मामले में अभियोजन पक्ष पर्याप्त रूप से साबित नहीं हुआ है।

मामला। यह दो कारणों से है: (1) यदि अपीलार्थी के कथित घर की 13.6.2010 पर पूरी तरह से तलाशी ली गई थी, जैसा कि ज्ञापन Ext.35 और वसूली ज्ञापन Ext.36 से स्पष्ट है, तो 16.6.2010 पर लेखों की वसूली का सवाल नहीं उठना चाहिए। यह घर और कुछ नहीं बल्कि 8 फुट x 6.5 का एक छोटा सा कमरा है। फीट (जिसमें से एक बाथरूम 2.5 फीट x 2.5 फीट था), जैसा कि Ext.35 से स्पष्ट है। अपीलार्थी की अनुपस्थिति में पुलिस दल ने

सूक्ष्मदर्शी द्वारा उक्त कमरे को स्कैन किया गया, और फिर भी कथित रूप से 16.6.2010 पर मेमो Ext.48 के माध्यम से बरामद कोई सामग्री नहीं मिली; (2) यहां तक कि बरामद की गई वस्तुएं, चाहे वह 13.6.2010, 16.6.2010 और 17.6.2010 पर की गई खोज की हों, अपीलार्थी को अपराध से पर्याप्त रूप से नहीं जोड़ती हैं। विस्तार के लिए, हम यहाँ एक सारणीबद्ध रूप में निकालते हैं, बरामद किए गए लेख, क्रमांकित, स्वीकृत और उनके वैज्ञानिक मूल्यांकन।

कैश निषाद @केवट जिनाक निषाद बनाम। राज्य की स्थिति

महाराष्ट्र

[संजय

करोल, जे।]

अज्ञात।

मृतक।

मृतक

,

खून।

, है।

@

बालः स्रोत

पर

द.

खून।

16 .

18

339

86

24

,

..

,

के पूर्व 17

पी जी

विश्लेषण परिणाम

20

भूतपूर्व

वीर्य

अभियुक्त नहीं।

पी जी

खून /

अभियुक्तों का

@ 339

चालू है

86

में से

डीएनए

वही खून।

भूतपूर्व

16 17 18

1 20 1 22

24

भूतपूर्व

@

में से

335

हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ 1 1 हाँ हाँ

84

रिपोर्ट करें।

..

खून से लथपथ

भूतपूर्व

पी जी

खून/अभियुक्त का

335

नं. 84

नहीं।

एफएसएल

.

.

222222

भूतपूर्व

वीर्य

@पी जी

Ex.

कार्डबोर्ड 8 ब्राउन 9 10 11 12 13 14

15 16

वर्णन

वस्तु

पर

में से

से

से

पर

लेख

सिवाय इसके

बाल

चटाई तौलिया

काटें।

काटें।

टाइल्स

स्पैनर

कंबल

तकिया। दाग।

एक.

लेख संख्या 7

तकिया पीस

चटाई का टुकड़ा

लोहा -

पीला।

दो।

नायलॉन

बॉक्स

--

-

-

-

-

1

सारा खून।

3 4

5 6 7 8 9

2

जाँच की गई

]

कुमार

रमेश

5

जैन नहीं

-

& पीयूष

पुनर्प्राप्ति गवाह

.

[

पीडब्लू

श्री.

-12

के द्वारा

पीडब्लू

|

तिथि

|

35

ज्ञापन

पंचनामा की विशेष खोज

239

.

पेज 243

सबसे पहले

@

एस. नं.

1.

[2023] 8 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट
मृतक।

टाइप करें "बी"

337]

खून।

@

खून।

3 , द.

पूर्व पर। 1.

पर

रक्त समूह

1 .

85

.

में से

.

पूर्व है

पूर्व [पीजी]

. 1 .

@ 337]

दाग

नहीं।

नहीं।

85

भूतपूर्व

.

.

पूर्व में

पी जी

[

वीर्य

1

2

1

3

4

2

@

pg.

331

हां।

हां।

हां।

80

327

हां।

नहीं।

नहीं।

82

पूर्व @

भूतपूर्व पीजी

@ 331

327

80

नहीं।

नहीं।

नहीं।

नहीं।

नहीं।

नहीं।

82

भूतपूर्व

भूतपूर्व पीजी

@पी जी

कोई नहीं।

2

3

4

|

में से

. 4

पर

नीला

पर

निकर्डिसेस्ड

.

और

अभियुक्त।

अभियुक्त।

बनियान

अंडरवियर

में से

बरमूडा

में से

अभियुक्त।

आरोपित

.

अभियुक्त।

लेख। 1

दाग 1,3

दाग।

भूरा।

धूसर

सफ़ेद

कमीज

पैटी

-

-

-

-

- 1

1

लेख

खून।

खून।

में से

3

4 में से

2

2

में से
कोडरलाल

हरिश्चंद्र
प्रदीप

जाँच की गई]

जाँच की गई
]

प्रदीप

7

8

काजवे

मेहता

नहीं।

-

-

&

&

.

.

नहीं।

[

[

पीडब्लू

पीडब्लू

श्री.

श्री.

पीडब्लू -

13

13

पीडब्लू

17.06.2010

16.06.2010

| 51

48

खोजें

पंचनामा

285

दूसरी खोज

287

264

262

.

पी जी

पंचनामा @pg

तीसरा

. 2

3 .

प्रकाश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद बनाम। महाराष्ट्र राज्य [संजय करोल, जे.]

52. उपरोक्त चार्ट से, यह स्पष्ट है कि कोई रक्त नहीं

पुलिस द्वारा बरामद वस्तुओं में से किसी एक पर अपीलार्थी पाया गया था। अभियोजक और उसके योनि स्वैब से संबंधित निकर (भूरे) पर केवल वीर्य के धब्बे पाए गए।

53. अपीलार्थी के विरुद्ध निर्णायक साक्ष्य स्थापित करने के लिए,

अभियोजन पक्ष दिनांकित 16.6.2010 संचार पर निर्भरता चाहता है जिसके तहत पीडब्लू 13 ने निदेशक, फोरेंसिक को विश्लेषण के लिए कुछ लेख भेजे प्रयोगशाला, महाराष्ट्र। उपरोक्त के संदर्भ में, 12,13 और 14 जून, 2010 को बरामद किए गए लेख, चाहे वे अपीलार्थी के हों या अभियोजक के, इस प्रकार हैं:

12.06.2010 पर प्राप्त अभियोजक के चिकित्सा अधिकारी द्वारा मुददेमल को सील कर दिया गया

लेखों का विवरण

बोतल

एस. नं.

प्रदर्शनी

रक्त का नमूना।

Ex. 1

1 .

ए.

बाएँ हाथ से नाखून की कतरनें।

बी.

Ex. 2

2 .

सिर पर बालों का नमूना।

एस.

3 .

Ex. 3

योनि द्रव स्वाब।

4 .

डी.

Ex. 4

योनि द्रव स्वाब।

Ex. 5

5 .

ई.

6 .

एफ.

मुँह में तरल पदार्थ।

Ex. 6

दाहिने हाथ से नाखून की कतरनी।

जी.

Ex. 7

7 .

13.06.2010 पर प्राप्त अपीलार्थी के लेख

चौकोर आकार का कार्ड बॉक्स, जिसमें शब्द हैं

8 .

Ex. 8

" सुनोरा फ्लोर टाइल्स "।

9 .

एक चॉकलेट रंग का गंदा कंबल।

Ex. 9

हरे रंग की टाइलों के दो टुकड़े।

10 .

Ex. 10

हरे, पीले और नीले रंग का एक टुकड़ा

11 .

Ex. 11

नायलॉन चटाई।

एक पीला तौलिया।

Ex. 12

12 .

एक लोहे का स्पैनर।

13 .

Ex. 13

तकिये पर एक बाल मिला।

Ex. 14

14 .

चटाई का एक टुकड़ा।

15 .

Ex. 15

16 .

तकिये से कपड़े का एक टुकड़ा।

Ex.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

अपीलार्थी की चिकित्सीय जाँच में चिकित्सा अधिकारी द्वारा मुद्देमल को सील किया गया

14.06.2010 पर आयोजित किया गया

विसरा नमूना।

बोतल 1

Ex. 17

1 .

रक्त का नमूना।

बोतल 2

Ex. 18

2 .

रक्त का नमूना (साइट्रेट)।

Ex. 19

3 .

बोतल 3

प्यूबिक बालों का नमूना।

4 .

बोतल 4

Ex. 20

सिर पर बालों का नमूना।

बोतल 5

Ex. 21

5 .

खरोंच लगी चोट का रुई से लिया गया स्वाब

बोतल 6

6.

Ex. 22

गर्दन।

7.

बोतल 7

दाहिने हाथ की नाखून की कतरनें।

Ex. 23

बोतल 8

बाएं हाथ की नाखून की कतरनी।

8.

Ex. 24

54. इन दस्तावेजों के अवलोकन से पता चलता है कि रक्त के नमूने

और अपीलार्थी के वीर्य को फॉरेंसिक विश्लेषण के लिए भेजा गया। हालांकि महत्वपूर्ण रूप से, यह स्थापित करने के लिए रिकॉर्ड पर कुछ भी नहीं है कि ऐसे नमूने किसने लिए, किस तारीख को, कितने अवसरों पर और उन्हें एक साथ क्यों नहीं भेजा गया, हम देखते हैं कि किसी भी पुलिस अधिकारी ने गवाही नहीं दी है

नमूनों को सुरक्षित और सुरक्षित रखने की औपचारिकताओं का पालन किया जा रहा है।

55. अपीलार्थी का पहला कथित रक्त नमूना एकत्र किया गया

14.6.2010 16.6.2010 (Ext.60) दिनांकित संचार के माध्यम से विश्लेषण के लिए भेजा गया था। 20.7.2010 पर लिया गया अपीलार्थी का दूसरा कथित रक्त नमूना उसी दिन संचार (Ext.72) के माध्यम से भेजा गया था।

56. रिकॉर्ड पर केवल एक दस्तावेज़ (Ext.79) है, जो दर्शाता है कि

अपीलार्थी की चिकित्सकीय जाँच की गई है। लेकिन यह दस्तावेज़ भी

शरीर के अंग के नमूने को नहीं दिखाता है। किसी भी स्थिति में, इस तरह की जांच करने वाले डॉक्टर ने गवाह बॉक्स में प्रवेश नहीं किया है ताकि इसकी सामग्री की शुद्धता की गवाही दी जा सके। इसके अलावा दस्तावेज़ अपने आप में अविश्वसनीय विश्वास है क्योंकि हम उसमें और एक अलग हाथ में कुछ अंतर्वेशन देखते हैं। इसके अतिरिक्त, दस्तावेज़ धारा 53ए Cr.P.C के तहत लगाई गई वैधानिक आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है।

57. कृष्ण कुमार मलिक बनाम में यह न्यायालय। हरियाणा राज्य

(दो-न्यायाधीश) ने धारा 53ए के अनुपालन की आवश्यकता का अवलोकन किया,

4 (2011) 7 एस. सी. सी. 130 प्रकाश निषाद @केवट जिनाक निषाद बनाम। महाराष्ट्र राज्य [संजय करोल, जे.]

जिसे बाद में राजेंद्र प्रहलादराव वासनिक बनाम में स्पष्ट किया गया था। महाराष्ट्र राज्य 3 (तीन-न्यायाधीश) कि उक्त प्रावधान प्रकृति में अनिवार्य नहीं है। यह देखा गया कि प्रावधान का पालन करने या न करने की आवश्यकता के संबंध में केवल एक सकारात्मक निर्णय लेने की आवश्यकता है। पीठ ने कहा कि

आधार मौजूद हैं, फिर धारा द्वारा अभिनिर्धारित एक चिकित्सा परीक्षा 53 - ए (2) सी. आर. पी. सी. आयोजित की जानी चाहिए और इसमें परीक्षा शामिल है।

अभियुक्त का विवरण और व्यक्ति से ली गई सामग्री का विवरण

डी. एन. ए. प्रोफाइलिंग के लिए अभियुक्त "।

(जोर दिया गया)

58. यहां छह साल की कम उम्र के एक बच्चे पर बेरहमी से हमला किया गया

और मार डाला। अपीलार्थी को अपराध करने के संदेह में गिरफ्तार किया गया था। पुलिस उसके अनुसार आगे बढ़ी और माना जाता था कि उसने हिरासत में अपीलार्थी द्वारा दिए गए बयानों के अनुसार खोज की थी, तो यह किस तरह से कहा जा सकता है कि उस समय जब अधिकारियों द्वारा इस तरह का सकारात्मक आह्वान करने की आवश्यकता थी, धारा 53ए का अनुपालन अनिवार्य होने के लिए उचित आधार मौजूद नहीं थे? इस न्यायालय के विचार में यह इस अपराध की जाँच में एक स्पष्ट चूक है, क्योंकि छह साल की बच्ची का उसके शरीर के दोनों गुप्त अंगों पर यौन उत्पीड़न किया गया था। का चिकित्सकीय परीक्षण

अपीलार्थी ने इस तरह के हमले का पता लगाया होगा।

59. जैसा कि अब तक देखा गया है, यह स्पष्ट नहीं है कि किसने लिया

अपीलार्थी के नमूने। किसी भी स्थिति में, रिकॉर्ड से पता चलता है कि 14.6.2010 पर लिए गए नमूनों का एक सेट 16.6.2010 पर रासायनिक विश्लेषण के लिए भेजा गया था और दूसरा नमूना लिया गया था, एक महीने बाद 20.7.2010 को उसी दिन भेजा जाता है। यदि समान प्रकृति के वैज्ञानिक साक्ष्य नहीं हैं, तो समान के संबंध में त्वरितता की ये अलग-अलग डिग्री क्यों मौजूद हैं?

अस्पष्टीकृत।

60. हम देख सकते हैं कि महाराष्ट्र पुलिस नियमावली, जब

परिशिष्ट XXIV राज्यों में वैज्ञानिक साक्ष्य की अखंडता की बात करते हुए

" प्रदर्शनी और नियंत्रण नमूनों की अखंडता की रक्षा की जानी चाहिए।

जब्त के क्षण से लेकर परीक्षा के पूरा होने तक प्रयोगशाला। यह सबसे अच्छा तुरंत पैकिंग, सीलिंग द्वारा किया जाता है।

5 (2019) 12 एससीसी 460 6 यहाँ उपलब्ध है-[HTTPS: //डब्ल्यू.डब्ल्यू.महापोलिस।गव.इन/अपलोड/एक्टनियम/MumbaiPoliceManualPartIII.pdf](https://डब्ल्यू.डब्ल्यू.महापोलिस।गव.इन/अपलोड/एक्टनियम/MumbaiPoliceManualPartIII.pdf) [2023] 8 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

और लेबलिंग और की अखंडता की निरंतरता साबित करने के लिए

नमूने, दूत या वाहक को अदालत में गवाही देनी होगी कि उसे जो मिला था उसे सील कर दिया गया था और उसी में वितरित किया गया था

प्रयोगशाला में स्थिति। प्रयोगशाला को यह प्रमाणित करना चाहिए कि उन्होंने मुहरों की तुलना की है और उन्हें सही पाया है। वस्तुओं को अलग से पैक करने के बाद उन्हें हमेशा एक दूसरे से अलग रखा जाना चाहिए और परिवहन में भी संपर्क से सावधानीपूर्वक बचना चाहिए।

61. वर्तमान मामले में, नमूने भेजने में देरी अस्पष्ट है और इसलिए, संदूषण की संभावना और

मूल्य में कमी की सहवर्ती संभावना से यथोचित रूप से इनकार नहीं किया जा सकता है। यह सुनिश्चित करने के लिए अभियान की आवश्यकता है कि एकत्र किए गए नमूनों को जल्द से जल्द संबंधित प्रयोगशाला में भेजा जाए, हम "जांच अधिकारियों के लिए अपराध दृश्य डीएनए नमूनों के संग्रह, भंडारण और परिवहन के लिए दिशानिर्देश-केंद्रीय फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला निदेशालय फोरेंसिक विज्ञान सेवा गृह मंत्रालय, भारत सरकार। भारत का "जो विशेष रूप से रक्त के संदर्भ में है और वीर्य, इसके रूप की परवाह किए बिना, यानी तरल या शुष्क (परत/दाग या बिखरे हुए) इस तरह से लिए गए नमूने को रिकॉर्ड करता है "बिना किसी देरी के प्रयोगशाला में प्रस्तुत किया जाना चाहिए"।

62. दस्तावेज़ में 'हिरासत की श्रृंखला' बनाए रखने पर भी जोर दिया गया है। अभिरक्षा की श्रृंखला का तात्पर्य है कि उस समय से

जब तक जांच और बाद की प्रक्रियाओं में इसकी भूमिका पूरी हो जाती है, तब तक नमूने को लेते हुए, उक्त साक्ष्य के टुकड़े को संभालने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रलेखन में विधिवत स्वीकार किया जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सत्यनिष्ठा असम्बद्ध है। यह अनुशंसा की जाती है कि एक दस्तावेज़ अभिरक्षा को सूचीबद्ध करते हुए विधिवत बनाए रखा गया। दूसरे शब्दों में अभिरक्षा दस्तावेज़ की एक श्रृंखला एक दस्तावेज़ है, जिसमें साक्ष्य एकत्र करने वाले व्यक्ति का नाम या आद्याक्षर शामिल होना चाहिए, प्रत्येक व्यक्ति या इकाई बाद में।

इसकी अभिरक्षा होने पर, वस्तुओं को एकत्र या स्थानांतरित किए जाने की तारीख, एजेंसी और मामला संख्या, पीड़ित या संदिग्ध का नाम और वस्तु का संक्षिप्त विवरण।

63. निर्विवाद रूप से, ये "बिना किसी देरी के" और "हिरासत की श्रृंखला" पहलू जो इस तरह के साक्ष्य की जीवंतता के लिए अपरिहार्य हैं, थे

अनुपालन नहीं किया। ऐसी स्थिति में, यह अदालत डी. एन. ए. रिपोर्ट Ext.85 को इतना भरोसेमंद नहीं मान सकती कि इस आधार पर किसी को फांसी पर चढ़ाया जा सके। हमने एफ. एस. एल. के साथ-साथ डी. एन. ए. रिपोर्ट को ध्यान से देखा है जो रिकॉर्ड का हिस्सा है। एक सारणीबद्ध प्रारूप में उक्त रिपोर्टों का एक सैपशॉट नीचे प्रस्तुत किया गया है: 7 एच. टी. पी. पर उपलब्ध: //सी. एफ. एस. एल. चंडीगढ़। गव. में/अपलोड/मीडिया/मूल 20180627121024 आई. ओ.-एस. ओ. पी.% 20फ़ाइनल।

पी. डी. एफ. प्रकाश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद बनाम। महाराष्ट्र राज्य [संजय करोल, जे.]
सीनियर नेचर ऑफ़ एक्सट। नहीं।

परिणाम और

डीएनए रिपोर्ट

से संबंधित है

रिपोर्ट करें।

लेख

अभियुक्त /

नहीं. &

विश्लेषण

दिनांकित

नं. लेख

के अनुसार

एफएसएल

तारीख

अभियोजक

रक्त और वीर्य

कब्ज़ा

ट्राइक्स

रिपोर्ट करें

किसकी

1 16.8.2010 10 अभियोजक हँ नहीं पर

1 . निकर

13.6.2010

अभियोजक

ट्राइक्स

2. जांगिया

11 पर

आरोपित

नहीं।

16.8.2010

नहीं।

2

संदर्भित किया गया है

16.6.2010

के रूप में

अंडरवियर

3 . बानियन

16.8.2010 12 पर

आरोपित

हां।

समान रूप से

3

नहीं।

खून पाया गया

16.6.2010

अभियोजक

एक्स. 1

ट्राइक्स

13 पर

आरोपित

4 .बरमूडा

4 16.8.2010

हां।

नहीं।

16.6.2010

समान रूप से

आरोपित

5. चौकोर।

16 12.8 .2010

1 पर

हां।

नहीं।

खून पाया गया

कार्ड-बोर्ड

13.6.2010

अभियोजक

ट्राइक्स

एक्स. 1

2 पर

6 . कंबल

आरोपित

नहीं।

समान रूप से

हां।

17 12.8.2010

खून पाया गया

13.6.2010

अभियोजक

Ext.1

ट्राइक्स

आरोपित

समान रूप से

3 पर

7 . फर्श टाइल्स 18 12.8.2010

हां।

नहीं।

खून पाया गया

टुकड़े

13.6.2010

अभियोजक

एक्स. 1

ट्राइक्स

12.8.2010 4 पर

आरोपित

हां।

नहीं।

8 . मैट.

19

13.6.2010

9 . तौलिया

आरोपित

हां।

समान रूप से

नहीं।

20

12.8.2010 5 पर

खून पाया गया

13.6.2010

अभियोजक

एक्स. 1

ट्राइक्स

10. स्पैनर

आरोपित

21

12.8.2010 6 पर

नहीं।

13.6.2010

आरोपित

22 12.8.2010 7 पर

अज्ञात

11. बाल मिले

नहीं।

तकिया पर

13.6.2010

व्यक्ति

8 पर

आरोपित

12. मैट.

23 12.8 .2010

हां।

नहीं।

13.6.2010

9 पर

आरोपित

समान रूप से

हां।

नहीं।

13. तकिया

24 12.8 .2010

खून पाया गया

अभियोजक

13.6.2010

एक्स. 1

ट्राइक्स

14. योनिमार्ग

5 12.8 .2010

अभियोजक

के साथ मिलान करें

नहीं।

हां।

पुरुष हाप्लो

स्मीयर

के प्रकार

स्लाइड

अभियुक्त।

हैं।

उसी से

पितृतुल्य

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

तैयार संदर्भ के लिए डी. एन. ए. विश्लेषण एक्स. टी. का सार। है।

नीचे की तरह डूस किया गया।

" व्याख्या

1. पूर्व 16 कार्ड बोर्ड, पूर्व 17 कंबल, पूर्व 18 टाइल के दो टुकड़े, पूर्व 20 तौलिया, तकिए से कपड़े का 24 टुकड़ा और पीड़ित सायुनम्बानो एम. ए. शेख के पूर्व 1 निक्कर पर खून का डीएनए प्रोफाइल पाया गया।

F.S.L.M.L के प्रकाश जिनक निषाद। मामला सं। डीएनए 315/10 और पीड़ित सायुनम्बानो एम. ए. शेख का पूर्व 1 रक्त नमूना समान है

& महिला मूल के एक ही स्रोत से। डीएनए प्रोफाइल रक्त के स्रोत में मातृ और पैतृक एलील के साथ मिलान करें।

2. पूर्व 16 कार्ड बोर्ड, पूर्व 17 कंबल, पूर्व 18 टाइल के दो टुकड़े, पूर्व 20 तौलिया, तकिए से कपड़े का 24 टुकड़ा, पीड़ित सायुनम्बानो एम. ए. शेख का पूर्व 1 रक्त का नमूना और पीड़ित सायुनम्बानो के पूर्व 1 निक्कर पर रक्त की डीएनए प्रोफाइल पाई गई। एम. ए. शेख, F.S.L.M.L के आरोपी प्रकाश ज़िनाक निषाद के पूर्व 3 सैंडो बनियान. केस No.DNA 315/10 और प्रकाश ज़िनाक निषाद के रक्त के नमूने F.S.L.M.L. केस नं. डीएनए 366/10 एक ही स्रोत से है। डी. एन. ए. प्रोफाइल उनसे मेल नहीं खाते थे।

रक्त के स्रोत में मातृ और पैतृक युग्मविकल्प। 3. अज्ञात व्यक्ति का नियंत्रण डीएनए प्रोफाइल पूर्व 22 से प्राप्त किया जाता है

एक बाल "।

64. अन्यथा भी, डी. एन. ए. साक्ष्य के मूल्य पर, हम इस न्यायालय द्वारा पट्टू राजन बनाम में किए गए अवलोकन का उल्लेख कर सकते हैं। राज्य टी. एन. 3,

वह;

" 52. अन्य सभी राय साक्ष्यों की तरह, डी. एन. ए. साक्ष्य को दिया गया संभावित मूल्य भी मामले के आधार पर अलग-अलग होता है।

तथ्यों और परिस्थितियों और अभिलेख पर अन्य साक्ष्य के लिए दिया गया वजन, चाहे विपरीत हो या पुष्टि करने वाला। यह याद रखना और भी महत्वपूर्ण है, यह देखते हुए कि भले ही डी. एन. ए. साक्ष्य की सटीकता हर गुजरते दिन के साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ बढ़ रही है, जिससे यह अधिक से अधिक विश्वसनीय हो रहा है, हम अभी तक उस मोड़ पर नहीं पहुंचे हैं जहां यह हो रहा है।

इसे अचूक कहा जा सकता है। इस प्रकार, यह नहीं कहा जा सकता है कि डी. एन. ए. साक्ष्य की अनुपस्थिति एक के खिलाफ एक प्रतिकूल अनुमान का कारण बनेगी

9) 4 एस. सी. सी. 771 प्रकाश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद बनाम। महाराष्ट्र राज्य [संजय करोल, जे.]

पार्टी, विशेष रूप से अन्य ठोस और विश्वसनीय लोगों की उपस्थिति में
ऐसे पक्ष के पक्ष में अभिलेख पर साक्ष्य।

(जोर दिया गया)

65. उपरोक्त मामले का उल्लेख करते हुए, मनोज बनाम मामले में तीन न्यायाधीशों की पीठ।

एम. पी. 'की स्थिति, एस. रवींद्र भट जे. के माध्यम से, देखी गई;

" 158. इसलिए इस न्यायालय ने डीएनए रिपोर्ट पर भरोसा किया है। अतीत, जहाँ किसी अभियुक्त के अपराध को स्थापित करने की मांग की गई थी।

विशेष रूप से, निर्भरता पुष्टि करने के लिए थी। इस न्यायालय ने इस पर प्रकाश डाला

साक्ष्य के संदूषण का; यह भी माना गया कि एक राय होने के नाते, इस तरह के साक्ष्य का संभावित मूल्य अलग-अलग मामलों में अलग-अलग होना चाहिए।

मामला "।

66. वर्तमान मामले में, हालांकि, डी. एन. ए. साक्ष्य किसी भी तरह से

एक रिपोर्ट मौजूद थी, इसकी विश्वसनीयता अचूक नहीं है, विशेष रूप से इस तथ्य के आलोक में कि इस तरह के साक्ष्य की असम्बद्ध प्रकृति स्थापित नहीं की जा सकती है; और अन्य कि ठोस साक्ष्य जैसा कि ऊपर हमारी चर्चा से देखा जा सकता है, लगभग पूरी तरह से अनुपस्थित है।

67. दुर्भाग्य से, नीचे की अदालतें उपरोक्त सभी मामलों में नहीं गईं।

पक्ष और अभिमानी रूप से अपीलार्थी का अपराध ग्रहण किया और अभिनिर्धारित किया

उसने अपराध किया है।

68. ऐसा प्रतीत होता है कि नीचे की अदालतों पर जो प्रबल था, वह था

डॉक्टर पीडब्लू 4 की गवाही-डॉ. अंजलि पिंपल, जिन्होंने पोस्टमॉर्टम किया और "निर्णायक चिकित्सा साक्ष्य" और "निर्णायक डीएनए रिपोर्ट"। यह उक्त चिकित्सा साक्ष्य के आधार पर है कि अदालतों ने परिस्थितियों के निर्विवाद होने के संबंध में कोई निष्कर्ष दर्ज किए बिना, अपीलार्थी को विरोधाभास,

प्रकृति में सामग्री, अभियोजन मामले और गवाहों के बयान की सत्यता के बावजूद दोषी ठहराया, और उनकी विश्वसनीयता पर भी महाभियोग चलाया।

69. इसके अलावा, नीचे दिए गए न्यायालयों के साथ जो बात अधिक स्पष्ट है

उच्च न्यायालय द्वारा वापस किए गए निष्कर्षों से, अर्थात्, कथित अपराध की प्रकृति वास्तव में हृदय विदारक, भयानक और सबसे अपमानजनक प्रकार में से एक है, जो मामले को दुर्लभ से दुर्लभतम मानते हुए, निचली अदालत द्वारा दी गई मौत की सजा की पुष्टि करने के लिए प्रेरित करती है।

70. यह सच है कि दुर्भाग्यपूर्ण घटना हुई थी, और

अभियोजक को उसके शरीर पर कई चोटें आईं और निश्चित रूप से होनी चाहिए

9 (2023) 2 एससीसी 353 [2023] 8 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

उन्हें बहुत दर्द, पीड़ा और आघात का सामना करना पड़ा। 6 साल की छोटी उम्र में, एक जीवन जिसके लिए भविष्य में बहुत कुछ रखा गया था, भयानक रूप से नष्ट हो गया था और

बुझा दिया। अभियोजक के माता-पिता को अथाह पीड़ा का सामना करना पड़ा

और अपीलार्थी और अपराध में किसी अन्य के अपराध को घर पहुँचाने के लिए आवश्यक कदम उठाने के प्रयास। 72. वास्तव में, परिस्थितियों की श्रृंखला में जम्हाई लेने वाले अंतराल हैं जो इसे स्थापित होने से बहुत दूर करते हैं-दोष की ओर इशारा करते हुए

अपीलार्थी। 73. जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, मामले की जांच करने वाली एजेंसियों की ओर से कई अनियमितताएं और अवैधताएं हैं।

74. तत्काल अपीलों में उठाए गए प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है।

तदनुसार। 75. इस मामले से अलग होने से पहले, हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि इस कायरतापूर्ण अपराध की जांच कैसे की गई थी।

कई खामियां पूरे नक्शे को मिटा देती हैं। हम पहले ही कई ऐसे उदाहरणों की ओर इशारा कर चुके हैं जिनके कारण परिस्थितियों की श्रृंखला टूट गई है, जिससे बड़ी तस्वीर सामने आई है कि वह व्यक्ति, चाहे वह कोई भी हो, आज तक दंडित नहीं किया गया है।

76. निर्दोष छह साल के बच्चे के खिलाफ किए गए दोनों अपराध, निर्विवाद रूप से, अपने आप में दुष्ट और गलत हैं, बिना कानून के निषेध के। यह तथ्य, न केवल देश के नागरिकों की रक्षा करने के लिए, बल्कि समाज को प्रभावित करने वाले अपराधों की निष्पक्ष और उचित जांच सुनिश्चित करने के लिए जांच अधिकारियों पर कर्तव्य के साथ, जैसा कि वर्तमान मामले में है, ऐसे अधिकारियों पर, इस न्यायालय के सुविचारित दृष्टिकोण से, न केवल कानूनी है, बल्कि ऐसे कृत्यों को करने वालों को कानून के पत्र के भीतर लाने के लिए सभी संभव कदम उठाने का नैतिक कर्तव्य भी है। 77. तत्काल मामले में, जांच अधिकारियों को बार-बार पीडब्लू 6 से पीडब्लू 12 और फिर पीडब्लू 13 में बदलने के कारण,

आश्चर्यजनक और अस्पष्ट है। जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, यह निर्णय लेने का कोई कारण नहीं दिया गया है कि धारा 53ए, Cr.P.C के प्रावधानों का पालन करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। ; एकत्र किए गए नमूनों को विश्लेषण के लिए भेजने में अस्पष्टीकृत देरी हुई है; एक परिसर में पहले से ही खोज की जा चुकी है-प्रकाश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद बनाम।

महाराष्ट्र राज्य [संजय करोल, जे.]

पुनः तलाशी ली गई, जिसका कारण अभिलेख से नहीं लिया गया है; ताला पंचनामा तैयार नहीं किया गया है; अपीलार्थी के रक्त और वीर्य का कोई नमूना किसी भी चिकित्सा या परा चिकित्सा कर्मचारी द्वारा नहीं लिया गया है; कथित रूप से गिरफ्तारी के एक महीने से अधिक समय बाद अपीलार्थी से एक अतिरिक्त नमूना लिया गया है; अपीलार्थी के कथित प्रकटीकरण बयान को कभी भी पढ़ा नहीं गया और अपीलार्थी को उसकी स्थानीय भाषा में समझाया नहीं गया; अपीलार्थी उस स्थान पर अकेला नहीं रह रहा था जो कथित रूप से उसका निवास स्थान था; और अपीलार्थी के संदिग्ध होने का आधार क्या था।

पहली बार में, एक रहस्य बना हुआ है; जिन व्यक्तियों ने आवश्यक पहलुओं पर प्रकाश डाला होगा- गणेश भीमा और मुन्ना सरोज की जांच नहीं की गई आदि, इस तरह की कई खामियों ने इस तरह के बर्बर कृत्य करने वाले को पूर्ण जोखिम में दंडित करने की खोज से समझौता किया है। 78. ऊपर वर्णित आरोप, यद्यपि गंभीर और गंभीर प्रकृति के हैं, यह नहीं कहा जा सकता है कि वर्तमान अपीलार्थी के खिलाफ आरोप पूरे किए गए थे। छह साल के निर्दोष बच्चे के खिलाफ अपराध करने का तथ्य विवाद में नहीं है और सबसे गंभीर शब्दों में भी इसकी पर्याप्त निंदा नहीं की जा सकती है। हालाँकि, जैसा कि उपरोक्त चर्चा ने स्पष्ट रूप से निर्धारित किया है, इस अपराध को करने की श्रृंखला बनाने वाली परिस्थितियाँ अपीलार्थी को इस तरह से निर्णायक रूप से इंगित नहीं कर सकती हैं और न ही इस तरह से इंगित करती हैं कि उसे मृत्युदंड की सजा के साथ उतना ही कम दंडित किया जा सकता है।

79. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए अपीलार्थी की स्थिति पर लगाए गए शुल्क

सिद्ध नहीं हुआ।

80. यह अदालत, हाल ही में, माघवेंद्र प्रताप सिंह बनाम सिंह मामले में। छत्तीसगढ़ राज्य ने भूमिका पर जोर दिया था और

इस न्यायालय के विभिन्न निर्णयों को संदर्भित करके जांच अधिकारियों की जिम्मेदारियाँ। सफल जाँच के लिए आवश्यक ऐसे सिद्धांतों का पालन नहीं किया गया। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि गंभीर अपराधों के मामलों में इस तरह की जिम्मेदारियाँ और अधिक बढ़ेंगी।

आजीवन कारावास या मृत्युदंड जैसे दंड।

मामले की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, पुलिस को तथ्य खोज और जांच अभ्यास की सुरक्षा के लिए सामान्य से भी अधिक कदम, सावधानी और निर्णय लेने चाहिए थे।

81. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, अपीलार्थी की अनुमति दी जाती है। पूर्व-परिणामतः,

जिला न्यायाधीश-2 और अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, ठाणे द्वारा पारित सत्र मामले No.407/2010 में
दिनांकित 27.11.2014 का निर्णय, जैसा कि पुष्टि की गई है

10 02023 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 486 [2023] 8 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

उच्च न्यायालय द्वारा 13 और 14 अक्टूबर, 2015 के फैसले के माध्यम से पुष्टि मामला संख्या 4/2014 में महाराष्ट्र राज्य बनाम। प्रकाश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद और आपराधिक अपील No.88/2015 जिसका शीर्षक प्रकाश निषाद @केवट ज़िनाक निषाद बनाम महाराष्ट्र राज्य है, क्रमशः अपीलार्थी को आई. पी. सी. की धारा 272, 376, 377 और 201 के तहत दोषी ठहराते हुए और उसे मौत की सजा और ऊपर वर्णित आजीवन कारावास और अन्य दंडों को रद्द कर दिया जाता है।

82. यदि किसी अन्य मामले में आवश्यकता न हो तो अपीलार्थी को तुरंत रिहा कर दिया जाए। लंबित आवेदनों, यदि कोई हों, का भी निपटारा किया जाता है।

अपीलों की अनुमति दी गई।

दिव्या पांडे

(सहायक: शेवाली मोंगा, एलसीआरए)

